1 हमारी भाषा
Our Language

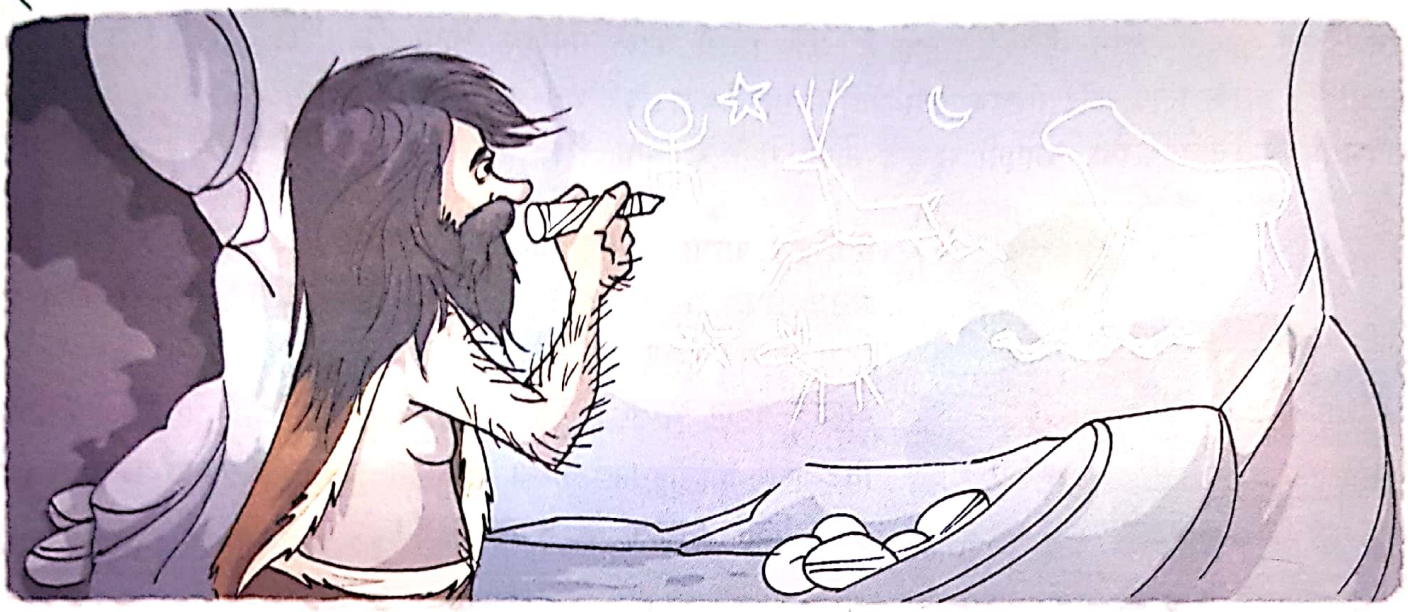

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह सोच-विचार सकता है। अपनी सोच को दूसरे के सामने रखना चाहता है। इसे आधार मानें तो आदिमानव ने अपने मन में उठनेवाले भावों और विचारों को व्यक्त करने के लिए पहले संकेतों या कुछ ध्वनि-चिह्नों का प्रयोग किया होगा। धीरे-धीरे इन्हीं ध्वनियों को व्यवस्थित किया गया होगा। कुछ ध्वनि-समूह किसी विशेष वस्तु का प्रतीक बनते गए। संकेतों का स्थान शब्दों ने ले लिया। एक के बाद एक शब्द जुड़ते चले गए और यहीं से भाषा का जन्म हुआ होगा।

आज के सभ्य मनुष्य समाज का कार्य व्यवहार भाषा के बिना संभव नहीं। पशु-पक्षियों की भी अपनी भाषा होती है, लेकिन उसे सिर्फ़ वे ही समझ सकते हैं। केवल मनुष्य ही है, जो भाषा का विविध रूपों में प्रयोग करता है।

इस प्रकार—

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा भावों और विचारों का आदान-प्रदान किया जाता है।

भाषा के रूप

मनुष्य बोलकर और लिखकर अपने भाव और विचार व्यक्त करता है तथा सुनकर और पढ़कर दूसरों के भाव या विचार ग्रहण करता है। संकेतों द्वारा भी भाव या विचार अभिव्यक्त किए जाते हैं। लेकिन संकेतों की अपनी सीमा है। अत: इन्हें भाषा नहीं कहा जा सकता।

Scanned with CamScanner

इस आधार पर भाषा के दो रूप हैं—

भाषा

- मौखिक भाषा
- लिखित भाषा

मौखिक भाषा— भाषा मूल रूप से मौखिक है। बोलकर और सुनकर भावों और विचारों का आदान-प्रदान मौखिक भाषा है। हम सबसे पहले मौखिक भाषा ही सीखते हैं। इसके लिए कोई विशेष यत्न नहीं करना पड़ता। दूरदर्शन के कार्यक्रम, आपस में बातचीत करना, कहानी सुनाना आदि मौखिक भाषा है।

लिखित भाषा— मौखिक भाषा स्थायी नहीं होती क्योंकि इसमें समय-समय पर परिवर्तन होते रहते हैं। इसलिए लिखित भाषा का जन्म हुआ। लिखकर और पढ़कर अपने भावों और विचारों का आदान-प्रदान करना लिखित भाषा है। इसे सयत्न सीखना पड़ता है।

विद्यालय का गृहकार्य करना, समाचार-पत्र या पत्रिकाएँ पढ़ना, ई-मेल आदि लिखित भाषा के उदाहरण हैं।

भाषा के अन्य विविध आयाम या रूप

बोली— बोली भाषा का छोटा या क्षेत्रीय रूप है। इसका साहित्य लिखित रूप में नहीं होता अपितु लोककथाओं या लोकगीतों के रूप में मिलता है। बोलियाँ ही विकसित होकर भाषा का रूप ले लेती हैं। हमारी हिंदी भाषा का विकास भी 'खड़ी बोली' से हुआ है।

बोली और भाषा में अंतर

बोली	भाषा
1. बोली सीमित क्षेत्र में बोली जाती है।	1. भाषा का क्षेत्र व्यापक है।
2. बोली का मौखिक साहित्य होता है।	2. भाषा का साहित्य लिखित रूप में होता है।
3. बोली का स्वरूप मानक नहीं होता।	3. भाषा का स्वरूप मानक होता है।

उपभाषा— उपभाषा का क्षेत्र बोली की अपेक्षा बड़ा होता है। इसका साहित्य मौखिक के साथ-साथ लिखित भी होता है; जैसे— अवधी, मैथिली, ब्रज आदि बोलियों में साहित्य की रचना हुई और इनका क्षेत्र भी विस्तृत था इसलिए ये उपभाषा कहलाईं।

Scanned with CamScanner

उपभाषाओं और उनकी बोलियों की सूची यहाँ दी गई है—

उपभाषाएँ	बोलियाँ
पश्चिमी हिंदी वर्ग	ब्रजभाषा, हरियाणवी, बुंदेली, कन्नौजी, खड़ी बोली
पूर्वी हिंदी वर्ग	अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी
बिहारी हिंदी वर्ग	भोजपुरी, मैथिली, मगही
राजस्थानी हिंदी वर्ग	जयपुरी (ढूँढाड़ी), मेवाती, मारवाड़ी, मालवी
पहाड़ी हिंदी वर्ग	कुमाऊँनी, गढ़वाली

मातृभाषा— जिस भाषा को हम अपने घर में बोलते हैं वही मातृभाषा कहलाती है। ज्ञान का सबसे उपयुक्त माध्यम मातृभाषा है। पंजाब में रहनेवाले की मातृभाषा पंजाबी, बंगाल में रहनेवाले की बंगाली और तमिलनाडु में रहनेवाले की मातृभाषा तमिल होगी।

राष्ट्रभाषा— राष्ट्रभाषा यानी वह भाषा जो देश के अधिकांश प्रदेशों, समाज के विभिन्न वर्गों और समुदायों द्वारा बोली जाती है। इस दृष्टि से हिंदी का स्थान सर्वोपरि है क्योंकि यह देश के लगभग 70 प्रतिशत लोगों द्वारा बोली जाती है।

राजभाषा— राजभाषा वह भाषा है, जिसका प्रयोग सरकारी कार्यालयों में काम-काज के लिए होता है। 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को भारतीय संविधान द्वारा राजभाषा का दर्जा दिया गया। इस दिन को प्रत्येक वर्ष 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

मानकभाषा— भाषा की एकरूपता को बनाए रखने के लिए विद्वानों द्वारा भाषा के अनेक रूपों में से जिस रूप को मान्यता दी जाती है वह भाषा का मानक रूप कहलाता है। **खड़ी बोली हिंदी** हमारा मानक रूप है।

संपर्कभाषा— वह भाषा जिसका प्रयोग लोग आपस में संपर्क करने के लिए करते हैं, वह संपर्कभाषा कहलाती है। भारत की संपर्कभाषा हिंदी और विश्व की संपर्कभाषा अंग्रेज़ी है।

भारतीय भाषाएँ—

भारतीय संविधान की अष्टम अनुसूची में बाईस (22) भाषाओं को स्थान दिया गया है। ये हैं— असमिया, ओड़िया, उर्दू, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, गुजराती, डोगरी, तमिल, तेलुगु, नेपाली, पंजाबी, बांगला, बोडो, मणिपुरी, मराठी, मलयालम, मैथिली, संथाली, संस्कृत, सिंधी, हिंदी।

लिपि

मानव समाज जब थोड़ा और विकसित हुआ, उसका फैलाव भी बढ़ा। केवल मौखिक रूप से बात नहीं बनी। मनुष्य ने अपनी बात स्पष्ट करने के लिए कुछ रेखाचित्र बनाए। धीरे-धीरे इन रेखाओं को ध्वनि-प्रतीकों के रूप में निश्चित करने लगा। निरंतर प्रयास करते-करते लंबे समय में लिपि का विकास हुआ। इस प्रकार लिपि लिखित भाषा का आधार बनी।

Scanned with CamScanner

लिखने की विधि या लिखने के ढंग को लिपि कहते हैं।

जिस प्रकार विश्व में अनेक भाषाएँ हैं उसी प्रकार इनको लिखने के ढंग भी अनेक हैं। अतः उनकी लिपियाँ भी विभिन्न हैं; जैसे— हिंदी, मराठी, कश्मीरी, कोंकणी, नेपाली, संथाली, बोडो आदि 'देवनागरी' लिपि में लिखी जाती हैं। अंग्रेज़ी, जर्मन, फ्रांसीसी आदि 'रोमन' में; उर्दू 'फ़ारसी' में; पंजाबी 'गुरुमुखी' में और बांगला भाषा 'बांगला' लिपि में लिखी जाती है।

देवनागरी लिपि की विशेषताएँ

1. देवनागरी लिपि में वर्णों का क्रम वैज्ञानिक और व्यवस्थित है।
2. देवनागरी लिपि का किसी भी भाषा में अनुवाद या लिपि-अंतरण हो सकता है।
3. प्रत्येक ध्वनि के लिए अलग लिपि-चिह्न और मात्राएँ होने के कारण लेखन में शुद्धता है।
4. देवनागरी जैसी बोली जाती है वैसी ही लिखी भी जाती है। जबकि फ़ारसी और रोमन में ऐसा नहीं है।

   देवनागरी में— क, प, म; फ़ारसी में - काफ़, पे, मीम और रोमन में—के, पी, एम।

हिंदी भाषा का महत्व

* भारत के दस प्रदेशों को हिंदी क्षेत्र कहा जाता है। आज हिंदी देश के कोने-कोने में बोली जाती है। उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, बिहार, मध्य प्रदेश, झारखंड, दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश, इन राज्यों में हिंदी राजभाषा है। पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र, अंडमान-निकोबार में हिंदी को द्वितीय राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया।
* हिंदी भाषा के प्रसार और लोकप्रियता में हिंदी फ़िल्मों और फ़िल्म संगीत का योगदान बहुत अधिक रहा है।
* भारत से बाहर हिंदी का प्रसार बहुत बड़े क्षेत्र में है। अफ़गानिस्तान, ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया, तंजानिया, त्रिनिदाद, थाईलैंड, दक्षिण अफ्रीका, नेपाल, फ़िजी, यमन, लीबिया, बर्मा, भूटान, मलेशिया, मॉरीशस, मोज़ांबिक, श्रीलंका, इराक, कनाडा, केन्या, गुयाना, जमैका, सिंगापुर, सूरीनाम, हॉलैंड आदि देशों में हिंदी जानने वाले मौजूद हैं। विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी का पठन-पाठन हो रहा है।
* हिंदी अब विश्व की दूसरी सबसे बड़ी भाषा है। कुछ लोग हिंदी को 'विश्वभाषा' भी कहते हैं।

व्याकरण

अब मानव के पास भाषा भी हो गई और लिपि भी; किंतु एक व्यक्ति की बात को अलग-अलग ढंग से समझा और ग्रहण किया जाने लगा। इससे विचार बना कि कुछ नियम बनाकर इस स्वरूप को और व्यवस्थित कर दिया जाए ताकि सभी भाषा के एक ही रूप को एक ही प्रकार से समझें। इसके लिए व्याकरण की व्यवस्था की गई जिसने भाषा की शुद्धता की जाँच-पड़ताल का ज़िम्मा लिया। इस प्रकार—

Scanned with CamScanner

व्याकरण वह शास्त्र है जिसके द्वारा भाषा के शुद्ध रूप तथा शुद्ध प्रयोग का ज्ञान होता है।

व्याकरण के अंग

व्याकरण के तीन अंग होते हैं—

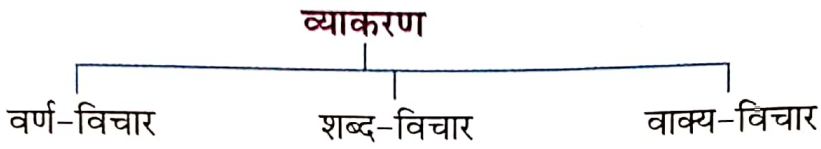

वर्ण-विचार— वर्णों के आकार, भेद, उच्चारण का अध्ययन करता है।

शब्द-विचार— शब्दों के रूप, भेद आदि का अध्ययन करता है।

वाक्य-विचार— वाक्यों के प्रकार, वाक्य-विग्रह, पद-परिचय, विराम-चिह्नों का अध्ययन करता है।

इनके बारे में हम आगे के अध्यायों में स्वतंत्र रूप से पढ़ेंगे।

साहित्य

साहित्य शब्द की उत्पत्ति 'स + हित' के योग से हुई है। यहाँ 'स' का अर्थ 'सबका' अर्थात 'संपूर्ण समाज का' से है, जबकि 'हित' का अर्थ 'लाभ' है। इस प्रकार साहित्य का अर्थ हुआ— संपूर्ण समाज का हित।

हिंदी साहित्य में साहित्य को परिभाषित करते हुए कहा गया है—

ज्ञान के संचित कोश को साहित्य कहते हैं।

साहित्य के मुख्य रूप से दो प्रकार हैं— i. पद्य ii. गद्य

i. **पद्य साहित्य—** इसे काव्य, कविता भी कहा जाता है। जब कवि अपने मन के विचार एवं भावों को छंद, तुक, लय आदि द्वारा व्यक्त करता है, तब उसे **पद्य साहित्य** कहते हैं। पद्य साहित्य के प्रमुख कवि और काव्य-ग्रंथ निम्नलिखित हैं—

प्रमुख कवि	काव्य ग्रंथ
कबीर	बीजक
मलिक मुहम्मद जायसी	पद्मावत
सूरदास	सूरसागर
तुलसीदास	रामचरितमानस, विनयपत्रिका
बिहारी	बिहारी सतसई
रहीम	रहीम दोहावली

Scanned with CamScanner

ii. **गद्य साहित्य—** इसमें लेखक अपने भावों अथवा विचारों को व्यवस्थित भाषा और रचनात्मक प्रकिया द्वारा व्यक्त करता है। गद्य के अंतर्गत निबंध, कहानी, उपन्यास, नाटक, आत्मकथा, जीवनी, यात्रा वृत्तांत आते हैं।

कुछ प्रमुख साहित्यकार और उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं—

प्रमुख साहित्यकार	गद्य रचनाएँ
भारतेंदु हरिश्चंद्र	अंधेर नगरी...
जयशंकर प्रसाद	चंद्रगुप्त
भीष्म साहनी	तमस
फणीश्वरनाथ रेणु	मैला आँचल
मन्नू भंडारी	महाभोज
मोहन राकेश	आषाढ़ का एक दिन, आधे-अधूरे
धर्मवीर भारती	गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा
मुंशी प्रेमचंद	रंगभूमि, गोदान

हमने सीखा

- भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा लोग आपस में विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।
- ज्ञान राशि का संचित कोश साहित्य कहलाता है।
- मौखिक ध्वनियों को जिन निश्चित चिह्नों के माध्यम से लिखा जाता है, वह लिपि है। इन चिह्नों की प्रस्तुति में एक व्यवस्था भी रहती है।
- व्याकरण द्वारा भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान होता है।
- 14 सितंबर, 1949 को भारतीय संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया।
- हिंदी भारत की राजभाषा और संपर्कभाषा है।

Scanned with CamScanner

6 शब्द-भंडार
Vocabulary

हमने व्याकरण वाटिका के **भाग 6** और 7 में अपना शब्द-भंडार विकसित किया था। यहाँ उसी क्रम को आगे बढ़ाया गया है। पुनरावृत्ति के साथ-साथ हम कुछ अन्य नए शब्द भी सीखेंगे।

पर्यायवाची शब्द

वे शब्द जिनका अर्थ लगभग एक ही होता है, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं। पर हर शब्द में कुछ-न-कुछ सूक्ष्म अंतर अवश्य रहता है; जैसे—कमल और पंकज।

1. अग्नि	—	आग, ज्वाला, अनल, पावक।
2. अतिथि	—	मेहमान, पाहुना, आगंतुक, अभ्यागत।
3. अद्‌भुत	—	अनुपम, अलौकिक, असाधारण, अद्वितीय।
4. अनुपम	—	अतुलनीय, निरुपम, अनोखा, विचित्र।
5. अमृत	—	सुधा, पीयूष, अमिय।
6. अरण्य	—	कानन, विपिन, वन, जंगल।
7. आँख	—	नयन, चक्षु, नेत्र, लोचन, दृग।
8. आकाश	—	आसमान, गगन, नभ, व्योम, अंबर, अंतरिक्ष।
9. आभूषण	—	भूषण, अलंकार, गहना, ज़ेवर।
10. इंद्र	—	देवेंद्र, सुरेंद्र, देवराज, सुरेश, सुरपति।
11. उद्‌देश्य	—	लक्ष्य, ध्येय, इरादा, मकसद, हेतु, प्रयोजन
12. उपवन	—	वाटिका, बगीचा, फुलवारी, उद्‌यान।
13. कमल	—	सरोज, जलज, अंबुज, पंकज, नीरज, राजीव, अरविंद।
14. कर्म	—	कार्य, काज, कृत्य, काम।
15. किनारा	—	तट, तीर, कूल, कगार, पर्यंत, बेलातट, पुलिन।
16. किरण	—	रश्मि, अंशु, मरीचि, कर, ज्योति, दिप्ति।
17. कृपा	—	अनुग्रह, दया, अनुकंपा, करुणा, मेहरबानी।
18. गंगा	—	भागीरथी, मंदाकिनी, सुरसरिता, देवनदी।
19. चंद्रमा	—	चंद्र, शशि, राकेश, मयंक, सोम, शशांक, इंदु, चाँद, सुधांशु
20. झंडा	—	पताका, ध्वज, केतु, निशान।

Scanned with CamScanner